RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 45 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 20 जनवरी , 2019

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 45, 17-20 जनवरी 2019 तदनुसार 7 माघ, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सात मर्यादाएँ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

सप्त मर्यादा: कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यं हुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ।।

–ऋ० १०।५।६

शब्दार्थ-कवय: = ज्ञानी महात्माओं ने **सप्त** = सात **मर्यादा:** = मर्यादाएँ **ततक्षु:** = बनाई हैं। यदि **तासाम्** = उनमें से **एकाम्+इत्** = एक का भी, मनुष्य **अभि+अगात्** = उल्लङ्घन करता है, तो वह **अंहुर:** = पापी होता है, किन्तु वह मनुष्य **ह** = सचमुच **आयो:** = प्रगति का, उन्नति का, अभ्युदय का, ज्ञान का **स्कम्भ:** = स्तम्भ है, जो **धरुणेषु** = विपत्ति के अवसरों पर, धैर्य की परीक्षा के समयों पर और **पथां+विसर्गे** = मार्गों के चक्कर पर भी **उपमस्य** = उपमा देने योग्य भगवान् के **नीळे** = आश्रय में **तस्थौ** = स्थिर रहता है।

व्याख्या–निम्नलिखित सात मर्यादाएँ हैं:

(१) अहिंसा= मन, वचन और कर्म से किसी को पीड़ा न पहुँचाना। (२) सत्य=यथार्थ का ज्ञान प्राप्त करके तदनुसार आचरण करना। (३) अस्तेय=पराये पदार्थ को स्वामी की आज्ञा के बिना कभी न लेना। (४) ब्रह्मचर्य=व्यभिचारत्याग, वेदाध्ययनपूर्वक वीर्यरक्षा। (५) शौच=शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शुद्धि रखना=व्यवहारशुद्धि। (६) स्वाध्याय=आत्मचिन्तन, आत्मानात्मविवेचन। (७) ईश्वरप्रणिधान=सब कर्म प्रभु को अर्पण कर देना। इनमें से किसी का भी उल्लङ्घन करने वाला पापी हो जाता है। इन मर्यादाओं पर ध्यान दीजिए। सभी का किसी-न-किसी इन्द्रिय से सम्बन्ध है। यथा अहिंसा शरीर, वाणी और मन तीनों से सम्बद्ध है। सत्य का वाणी से सम्बन्ध है। शौच का सभी इन्द्रियों से सम्बन्ध है। स्वाध्याय का मन और वाणी से सम्बन्ध है। ईश्वरप्रणिधान का मन से सम्बन्ध है। इसका भाव यह हुआ कि इन मर्यादाओं की रक्षा के लिए इन्द्रिय-निग्रह नितान्त प्रयोजनीय है, अतएव मनुजी ने कहा है–

इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम्।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृते: पात्रादिवोदकम्।। **–मनु० २।९९**

सभी इन्द्रियों में यदि कोई भी स्खलित होती है, तो मनुष्य का नाश होता है, जैसे चमड़े के पात्र से जल बह जाता है, अत:–

वशे कृत्त्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा।
सर्वान् संसाधयेदर्थानक्षण्वन् योगतस्तनुम्।। **–मनु० २।१००**

इन्द्रियसमुदाय तथा मन को वश में करके और योग द्वारा शरीर को पीड़ा न देता हुआ सब कार्यों को सिद्ध करे।

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

सचमुच वह वीर है जो कठिन परीक्षा के समय, मर्यादाभङ्ग का प्रलोभन प्राप्त होने पर भगवान् को स्मरण कर दृढ़ रहता है। मनु ने भी ऐसे ही वीर को जितेन्द्रिय कहा है–

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नर:।
न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रिय:।। **–मनु० २।९८**

जो मनुष्य सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर, सूँघकर हर्ष-शोक को प्राप्त नहीं होता, उसे जितेन्द्रिय जानना चाहिए। जिस पर इन्द्रियाँ अपना प्रभाव नहीं डाल सकतीं, सचमुच वह वीर है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का महत्व

ले.-आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद म.प्र.

शिक्षा शब्द शिक्षा विद्योपादाने धातु गुरोश्च हलः सूत्र से अप्रत्यय करके स्त्रीलिंग में अजाद्यतष्टाप् सूत्र से सिद्ध होता है। इस शिक्षा की जितनी आवश्यकता आज से करोड़ों वर्ष पहले थी उतनी ही आज है, शिक्षा मनुष्य की सनातन आवश्यकता है, जब आवश्यकता सनातन है तो महत्व भी सनातन होगा, क्योंकि आवश्यकता ही निश्चय करती है कि वस्तु कितनी महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के बिना मनुष्य का गुजारा न पहले था न आज है न आगे होगा क्योंकि शास्त्रकार ने कहा है-वंशो द्विधा विद्यया जन्मना च। अर्थात् वंश एक विद्या के द्वारा और दूसरा जन्म के द्वारा होता है। जन्म के द्वारा मनुष्य का हाड़, मांस, चर्बी, रोम, मज्जा से युक्त ढांचे का निर्माण होता है। परन्तु विद्या मनुष्य को मनुष्यता सिखाती है और मोक्ष तक का रास्ता पूर्ण करती है।

आज तथाकथित लोगों ने शिक्षा में ऐसा माहौल पैदा कर दिया है जिसे देखकर ये कहना पड़ता है कि वर्तमान में शिक्षा की न आवश्यकता है और न महत्व है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखकर मैं शिक्षा को तीन विभागों में बांटना चाहूँगा-1. शिक्षा, 2. कुशिक्षा, 3 सत शिक्षा। कुशिक्षा की आवश्यकता कभी भी नहीं थी मात्र शिक्षा मनुष्य को उसके गन्तव्य तक नहीं पहुँचा सकती है परन्तु सत्शिक्षा मनुष्य को उसके गन्तव्य तक पहुँचाती है और उसकी आवश्यकता हमें करोड़ों वर्षों पहले थी आज है और आगे रहेगी। सत्शिक्षा तो वो चीज है जिसमें सूर्य की प्रखरता है, चन्द्रमा की सौम्यता है, यज्ञ की धूम्यता है, वेद की पावनता है, जल की शीतलता है, आम्रकुंजो की मादकता, माता-पिता का वात्सल्य, भाई-बहन का सौहार्द, पुत्र-पुत्रियों की मिठास, पत्नी का सद्भाव और सामंजस्य, बड़ों का आशीर्वाद है।

जिस तरह प्रत्येक श्रेष्ठ वस्तु के साथ खुरापाती लोग छेड़छाड़ करते हैं वैसे ही शिक्षा के साथ भी मनुष्य ने किया, जिसके परिणामस्वरूप हम उसके अन्तस्थः तक नहीं पहुँच पाये। आज ऋषि दयानन्द को छोड़कर किसी के पास शिक्षा की ठीक परिभाषा भी नहीं है। आज हम एजूकेशन को ही शिक्षा मानते हैं पर ये बिल्कुल गलत है आप देखेंगे एजूकेशन शब्द लेटिन भाषा का है ये दो शब्दों के मेल से बनाता है ई+डुको। ई का तात्पर्य होता है अन्दर से बाहर की ओर, डुको का अर्थ होता है आगे बढ़ाना मोटे शब्दों में कहे तो अन्दर जो भरा है उसे बाहर निकालने का नाम एजूकेशन है। अगर इस एजूकेशन को ही शिक्षा मान लिया जाये तो सोच कर देखो, अगर मेरे अन्दर चोरी के भाव हैं तो उन्हें भी बाहर निकालने का नाम शिक्षा होगा। जितनी परिभाषायें पाश्चात्यों ने बनाई वे कहीं न कहीं अपूर्ण सिद्ध हुई परन्तु ऋषि दयानन्द ने शिक्षा की एक पूर्ण परिभाषा दी जब ऋषि से पूछा गया कि शिक्षा क्या है तो उन्होंने कहा-जिससे सभ्यता, विद्या, धर्मात्मा, जितेन्द्रियता बढ़े और अविद्या, असभ्यता, अधर्मात्मता, अजितेन्द्रियता का नाश होवे अर्थात् दूर हो वही शिक्षा है। इस परिभाषा वाली शिक्षा की आवश्यकता मनुष्य को सदा रही है, क्योंकि बिना सिखाये मनुष्य चाहे सौ साल का वृद्ध ही क्यों न हो जाये नहीं सीख सकता। इसलिए मनुष्य को हर समय सीखना पड़ता है और नया-नया करने के लिए मनुष्य के जीवन में शिक्षा का महत्व सदा से था और आगे रहेगा।

शिक्षा के तीन उद्देश्य है-

शारीरिक उन्नति, मानसिक उन्नति, आत्मिक उन्नति ये मनुष्य के जीवन की नितान्त आवश्यकताएँ हैं, एतदर्थ इनकी पूर्ति करने वाली शिक्षा भी मनुष्य के लिए सदा महत्वपूर्ण रहेगी। परन्तु आज शिक्षा की परिभाषा बदल गई और हम उसे शिक्षा मानने लगे जिसकी नींव 1813 में चार्ट एक्ट नाम के नियम में रखी गई जिसका उद्देश्य रखते हुए लार्ड मेकाले ने ब्रिटेन के कॉमन हाउस में 20-2-1835 को स्पीच देते हुए कहा था कि ''हम नई शिक्षा नीति चलाकर एक ऐसे समुदाय का निर्माण करेंगे जो रंग रूप में भारतीय पर आचार-विचार रुचि में अंग्रेज हो।''

उस समय शिक्षा पद्धति को लेकर दो सम्प्रदाय थे पहले सर विलियम्स जॉन जो शिक्षा पद्धति को संस्कृत में चलाना चाहते थे दूसरे थे राजाराम मोहनराय ये शिक्षा पद्धति को अंग्रेजी में चलाना चाहते थे और ये कहते थे हम बैलगाड़ी के जमाने में नहीं जीना चाहते हैं अपितु मोटरकार के जमाने में जीना चाहते हैं और हम व्याकरण के तिड़न्त-सुबन्त और दर्शन की गहन जटिलताओं में विद्यार्थी का समय बर्बाद नहीं करना चाहते हैं और परिणाम यह हुआ कि इस विषम परिस्थिति से गुजरते हुए जो 1813 में मद्रास से यह शिक्षा पद्धति चली। उस शिक्षापद्धति ने डाक्टर इंजीनियर तो दिये परन्तु राष्ट्रभक्त नहीं।

इस शिक्षा पद्धति को हमें परोसकर यह बताया गया प्रारम्भ में हम मूर्ख थे और अंग्रेजों ने हमें ज्ञान दिया, परन्तु यह कहने वाले भूल गये कि दक्षिणी बिहार के निकट राजगिरी के उस नालंदा विश्वविद्यालय को जहाँ दस हजार देश व विदेश के छात्र अध्ययन किया करते थे, तक्षशिला विश्वविद्यालय तमिलनाडु में बिल्लुपुरम् में नौवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी में आठ हजार विद्यालयों में मंगोलिया तक के छात्र अध्ययन के लिए आया करते थे। प्रत्येक छात्र पेट व अंतड़ियों का आपरेशन बड़े, आराम से कर लिया करता था परन्तु उन विश्वविद्यालयों का ह्रास हुआ और आई ये आधुनिक शिक्षा, जिसके लिए मैथिलीशरण गुप्त ने कहा था ''शिक्षे तुम्हारा नाश हो तुम नौकरी के हित बनी।''

भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी ने कहा था आजादी के बाद हमारी दो सबसे बड़ी भूल है शिक्षा प्रणाली और नौकरशाही अफसरशाही को ज्यों का त्यों ले लेना। इस शिक्षा पद्धति ने नौकरों की भरमार कर दी, परन्तु ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से 1902 में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल पद्धति की स्थापना की और उससे सच्चे मानव का निर्माण किया। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है ''गुरुकुलशिक्षाया ब्रह्मचर्य प्राणभूतम्, धार्मिकता, तस्याः शरीरम् राष्ट्रीयता च तस्याः सौन्दर्यम्'' इन भावों से ओत-प्रोत शिक्षा का महत्व सदा रहा है, सदा ही रहेगा परन्तु कुछ श्रेष्ठ जनों के मन में दुर्विचार धीरे-धीरे प्रवेश कर रहा है कि गुरुकुलों को स्कूलों का रूप देकर सरकार से पैसा लेकर उत्तम विद्वानों का निर्माण किया जाये परन्तु ऐसा सोचने से पूर्व उन्हें इतिहास उठा करके देखना चाहिए कि गुरुकुल कांगड़ी ने सैकड़ों वेद के विद्वान दिये।

हमें गुरुकुलों को उसी स्थिति में लौटाना होगा जिस स्थिति में वे प्राचीन काल में थे और गुरुकुलों द्वारा जिस शिक्षा का अध्ययन-अध्यापन होगा वह सर्वकाल सर्वस्थान में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होगा। परमेश्वर हम आर्यों को वो शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे कि हम ऐसी शिक्षा का प्रचार करें जो समस्त भू-मण्डल में सर्वकाल में महत्वपूर्ण होवे।

सम्पादकीय

3 फरवरी को बरनाला पहुंचे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य समाज बरनाला के संयोजकत्व में बरनाला की प्रमुख शिक्षण संस्था लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में 3 फरवरी 2019 रविवार को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के रूप में भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के महानुभावों से निवेदन है कि इस भव्य समारोह में बढ़-चढ़ कर भाग लें। आप सभी के पावन सहयोग से इस प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तथा वेद की पवित्र वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए ही इस प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द जी का जीवन वैदिक संस्कृति एवं वेदों के प्रति समर्पित रहा है। वेदों के प्रचार एवं प्रसार को स्थाई रूप देने के लिए ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। महाभारत युद्ध के पश्चात हम जिस रसातल की ओर जा रहे थे। अपने सत्य ग्रन्थ वेदों को भूलकर पुराणों और अनार्ष ग्रन्थों में पड़कर समाज में बहुत सी नई कुरीतियों ने जन्म लिया था। मूर्तिपूजा के कारण समाज की बहुत हानि हो रही थी। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण समाज कई टुकडों में बंट चुका था। जातिवाद और छूआछूत के कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और छल कपट की भावनाएं थी। जिसके परिणामस्वरूप हम पहले मुगलों के आधीन रहे और उसके पश्चात हमें अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी। ऐसे समय में एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र को जहां सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकें वहीं पर धर्म के नाम पर हो रहे व्यापार से लोगों को छुटकारा मिले। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिससे धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की जड़े हिल गई और समाज में फैल रही कुरीतियों से भी लोगों से छुटकारा मिला। आर्य समाज ने एक ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिसे धधकती आग का नाम दिया गया। जिस आग में सभी सामाजिक कुरीतियां जलकर भस्म हो गई। इसके साथ ही लोगों में स्वतन्त्रता के प्रति भाव जागृत हुए। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है और आगे भी करता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का आर्य महासम्मेलन को करने का उद्देश्य है कि लोगों में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। जब तक आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार नहीं होगा तब तक महर्षि दयानन्द के कार्यों के प्रति लोग जागरूक नहीं होंगे। वैदिक सिद्धान्त ही आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त हैं। आज समय की मांग है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जागरूक होकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का जिम्मेदारी के साथ वहन करे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव इस कार्य के लिए प्रयासरत है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसलिए सभी आर्य समाजें लोगों में नि:शुल्क साहित्य बांट कर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। इसके साथ ही सभा के द्वारा सभी संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है ताकि वेद प्रचार का कार्य चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। जहां वे स्वयं दानशील हैं, समाज के कार्यों में, परोपकार के कार्यों में हमेशा आगे रहते हैं वहीं सभी को ऐसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। अपने पिता स्व. पं. हरबंस लाल शर्मा जी के पद्चिह्नों पर चलते हुए इनका सारा परिवार आर्य समाज के प्रति समर्पित है। समाज सेवा के क्षेत्र में इस परिवार का अपना विशेष सम्मान है। दीन-दुखियों की सहायता करना यह परिवार अपना धर्म समझता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का मानना है कि सभी कार्य एक दूसरे के सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से कार्यक्रमों का आयोजन करती है और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी। यह वेद प्रचार कार्यों की श्रृंखला आर्य महासम्मेलनों के रूप में इसी प्रकार चलती रहेगी। इससे पहले भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में लुधियाना तथा नवांशहर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन बहुत ही सफलतापूर्वक किया जा चुका है जिसमें आप सभी आर्यजनों ने बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया था। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली में भी पंजाब की सभी आर्य समाजों ने सराहनीय सहयोग दिया है और बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। इस बार 3 फरवरी को आर्य महासम्मेलन का आयोजन आर्य समाज बरनाला के संयोजन में लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में किया जा रहा है। इसी प्रकार आगे भी अलग-अलग जिलों में यह आयोजन चलता रहेगा।

अंत में मैं पंजाब की सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन करता हूं कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दें। वेद की वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए अपनी-अपनी आर्य समाजों की तरफ से भारी संख्या में लोगों को बरनाला लेकर आएं। अपनी-अपनी आर्य समाज एवं संस्थाओं के बैनर एवं ओ३म् के ध्वजों से वाहनों को सजाएं और महर्षि दयानन्द के जयघोष करते हुए उत्साह के साथ बरनाला पधारें। आर्य महासम्मेलन में आने वाले आर्यजनों की सूची बनाकर सभा कार्यालय जालन्धर में भेजने की कृपा करें जिससे आपके भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था की जा सके।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

३. सूखा सिघाड़ा और मखाने दोनों सम मात्रा में लें बारीक चूर्ण कर रख लें। ५ ग्राम गर्म दूध में डाले। ५ ग्राम मिश्री पिसी हुई १ लोंग १ काली मिर्च, एक टुकड़ा दाल चीनी का पीस चूर्ण के साथ दूध में डालें। ५ ग्राम घी सुबह खाली पेट ४० दिन सेवन करें। बहुत ही लाभप्रद है।

निर्बलता नाशक योग-आमल की रसायन आयुर्वेदिक औषधि लें। असगन्ध ३० ग्राम कूट पीस छानकर शीशी में रख लें। दोनों दवाऐं लेकर ३ ग्राम शहद के साथ चाटें। धीरे-धीरे मात्रा बढ़ा दें। ५ ग्राम कर दें। शहद न हो मिश्री की चासनी मिला लें। जो मधुमेह के रोगी हों वह शहद के साथ लें। शरीर का दुबलापन दूर होगा। पिचके गाल भर जायेंगे। शरीर सुडौल होगा। औषधि १ माह सेवन करें।

मकड़ी फरने पर-ओंघा की जड़ (चिरमिटा लम्बी बाल वाला) पीसकर नौनी घी में मलकर लगायें।

मच्छर भगाना-१. चीड़ की लकड़ी की धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

२. छड़ीला और फिटकरी को जलाकर मकान में धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

३. कनेर के पत्तरों की धूनी देने से मच्छर भग जाते हैं।

मधुमेह-१. मैथी ५ ग्राम दल करके साँय काल पानी में भिगो दें। प्रात: इसे खूब घोंट कर कपड़े में छान कर पियें। २ माह सेवन करें। अति लाभप्रद है।

२. करेलों का रस ताजा निकाल कर २० ग्राम थोड़ा नमक मिलाकर प्रतिदिन हल्के नाश्ते के बाद पियें। २ माह में रोग जड़ से नष्ट हो जायेगा।

३. हल्दी पिसी हुई ३ ग्राम १० ग्राम शहद मिला कर चाटें २-३ माह में मधु मेह प्रमेह ठीक हो जाता है।

४. गौ मूत्र बछिया का लेकर छान कर पियें।

५. छोटा करेला उनके बीज निकाल कर पके हुए हों उनको छाया में सुखा दो सूख जाने पर उनमें करेले का रस डालें ऐसा सात बार करें सात चारना देकर ५ ग्राम चूर्ण जामुन के पत्तों के रस साथ १० ग्राम जामुन के पत्तों को पीसकर घोंटकर ५० ग्राम पानी तैयार करें और पियें। १ पखवाड़ा में रोग दूर होता है। अति चमत्कारिक औषधि है।

६. आँवला सूखा १०० ग्राम सोंफ समभाग दोनों को बारीक पीसकर चूर्ण बनायें ५-५ ग्रीम सुबह शाम पानी के साथ फाकें। ३ माह सेवन करें। लाभ होगा।

मलेरिया बुखार-१. हरुल हुल सफेद फूलवनाली का पंचाग (जड़, फूल, पत्ते, फल, डण्ठल) को कूटकर रस निकाल लें। फिर इसे छान लें। ५-५ ग्राम तीन बार पिलायें: २ दिन में बुखार से लाभ होगा। दुबारा आने पर भी यह औषधि लाभप्रद है।

पथ्य-पेट साफ रखें। दलिया या दूध खायें। रोटी नहीं। एक दिन केवल दूध ही लें तो अति लाभ रहेगा।

२. फिटकरी को भूनकर पीस लें। बुखार चढ़ने से पहले १ ग्राम दवा मिश्री में मिलाकर या बताशे में मिलाकर पानी से फाकें। बुखार नहीं चढ़ेगा। यदि चढ़ भी गया तो २ दिन में ठीक हो जायेगा औषधि प्रात: सांय सेवन करें।

३ काली मिर्च ३ दाने तुलसी के पत्ते ३ दोनों घोंटकर गोली बना लें २-२ गोली जल से तीन बार लें। अति लाभकारी है।

४. सत्या नाशी के बीज साबुत तीन ग्राम गर्म पानी के साथ लें। कितने भी जोर का बुखार हो पसीना आकर उतर जायेगा।

मसूड़े फूलना-१. यदि मसूड़े फूल रहे हों तो जरा सा नौसादर लेकर भून लें थोड़ा कच्चा मिला लें। फिर इसे रूई के फाये से दर्द वाले स्थान पर रखें। राल नीचे को टपकायें मुह टेढ़ा करके। थोड़ी देर में गन्दा पानी निकल जायेगा और आराम मिलेगा।

मस्तिष्क के रोग (दिमागी कमजोरी)-१. पीपल के कोमल पत्ते छाया में सुखा कर चूर्ण बना लें समभाग मिश्री मिला लें। प्रात: सांय ५ ग्राम दवा गौ दुग्ध से लें। १ माह सेवन करें। अति लाभप्रद है।

२. बादाम की मिंगी १० ग्राम ब्राह्मी बूटी ५ ग्राम काली मिर्च ७ नग बादाम तथा ब्राह्मी को रात को भिगो दें। बादाम का छिलका अलग कर ब्राह्मी को साफ करके घोंटकर मिश्री मिलाकर सर्बत बनाकर पिये।

मन्दाग्नि-१. चित्रक, अजमोद, सैंधा नमक, सोंठ, काली मिर्च सम भाग लेकर चूर्ण बना लें। सुबह शाम छाछ से लें। बवासीर पीलिया में लाभप्रद है।

२. काली मिर्च, सोंठ, पीपल छोटी, जीरा, सैंधा नमक, सब १० १० ग्राम पीसकर शीशी में रख लें। भोजन के बाद २ ग्राम जल के साथ फाकें। रोग दूर होगा।

मरोड़े होना-बेल गिरी मोचरस, इन्द्र जौ, गुलधावा, आम की गुठली की गिरी प्रत्येक १०-१० ग्राम अफीम ५ ग्राम सबको अलग-अलग कूटपीस छानकर बाद में अफीम मिला लें। १/२ ग्राम दवा दही की लस्सी के साथ लें। पुराने मरोड़े, पेचिश में राम बाण है।

मसाने की कमजोरी-विनौला ५० ग्राम को भूनकर कूट लें। फिर ५० ग्राम मूसली सफेद कूट छान कर मिला दें ५ ग्राम दवा सुबह शाम दूध के साथ लें। मसाने की शक्ति देता है स्त्रियों के श्वेत प्रदर के लिए अति लाभप्रद है। २ माह सेवन करें।

मुँह के छाले-१. मुलहठी चूर्ण चूसने से मुँह के छाले ठीक होते हैं।

२. चमेली के पत्ते चबायें मुंह के छाले ठीक हो जायेंगे।

३. इलायची शबद में मिलाकर चाटें। छाले दूर होंगे।

४. चिंरोजी के ४-५ दाने चबायें।

मुंहा से-१. चिरोंजी पीसकर मुंह पर लेप करें।

२. आँवला चूर्ण मक्खन में मिलाकर मुंह पर मालिश करें।

मस्से (मुख पर हो जाना)-१. चूना और घी समभाग लेकर दोनों को मिला घोंटकर ३-४ बार मस्सों पर लगायें।

२. धनिया पीसकर लगायें। अथवा सीपी की भस्म सिरके में मिलाकर लगायें।

मासिक धर्म रुकने पर-१. कलौजी ५ ग्राम चूर्ण को पानी के साथ फाँकने से बन्द रजो धर्म खुल जाता है। पेशाब साफ आता है।

२. आक की जड़ को छाया में सुखा कर चूर्ण बना लें १ ग्राम दवा फाँक कर गर्म दूध २०० ग्राम पियें। इस दवा से पेट का दर्द, वायु गोला, कटि पीड़ा, हड़ फूटन आदि रोग दूर होते हैं।

मासिक धर्म अधिकता से आना-१. मुलहठी का चूर्ण ५० ग्राम गेरू पिसा हुआ २० ग्राम दोनों को मिला सीसी में रख लें। ५ ग्राम दवा चावल के धोवन के साथ दें। (२० ग्राम चावल २ घन्टे पहले भिगो दें। तत्पश्चात इस पानी का प्रयोग करे। दिन में ३ बार ४-४ घन्टे पश्चात दे। भोजन दूध चावल प्रयोग करे। बरगद की कोंपल (पत्ते) १० ग्राम मिश्री में घोंट कर पियें।

मन एकाग्र के लिए-शंखपुष्पी (संखाहूली सफेद फूल वाली) सांठ की जड़ समभाग मिश्री दूनी मिलाकर पानी के साथ फाके। गर्मियों में शर्बत बना के लिये।

मृगी-१. ब्राह्मी का रस २ ग्राम शहद ५ ग्राम दोनों को मिला कर पिलायें।

२. फल कटेरी नीले फूल वाली के फल नस्य देने से लाभ होता है।

मुख की बदबू-जायफल, जावित्री, दाना मरुवा के फूल, तुलसी के पत्ते केशर सबको समभाग पीस लें, फिर गुड़ मिलाकर मटर जैसी गोली बना लें। इन गोलियों को चूसते रहें। मुख की बदबू जाती रहेगी।

मूँढ गर्भ-अर्जुन की छाल २० ग्राम सिरस की छाल सम भाग मिलाकर दोनों को जौ कूट करके २०० ग्राम पानी में उबालें। जब चौथाई रह जाय तब उतार कर ठन्डा होने पर रुई के फाया से ३, ४ बार योनि को धोयें फाया को कुछ देर भीतर ही रहने दे। इससे योनि की सफाई हो जाती है। अनुभूत योग है।

मूर्च्छा-१. असगन्ध नागौरी ५ ग्राम शतावर ५ ग्राम दोनों को कूटकर गौ दुग्ध में डाल दें। दूध में कुछ पानी भी मिला दें और गर्म करें जब आधा रह जाये दूध तब उतार कर छान कर ठन्डा करके मिश्री मिलाकर रोगी को १ सप्ताह पिलायें। हिस्ट्रीरिया रोग की भी अनुभूत औषधि है।

मूत्र रोग-१. पीपल के पत्तों का काढ़ा पिलायें। उसमें मिश्री मिला लें।

२. बड़ का काढ़ा पिलायें। उसमें मिश्री मिला लें या शहद मिला लें।

मूत्र कृच्छ (सुजाक)-१. सूरज मुखी के फूल के बीज ५ ग्राम वासै पानी में पीसकर और छानकर पिलाने से सुजाक रोग दूर होता है। पथरी भी निकल जाती है।

२. सत्यानाशी के बीज पीसकर शर्बत बनाकर पिलायें। काली मिर्च डालकर १० ग्राम काली मिर्च।

३. फिटकरी और गुड़ सम भाग लेकर १-१ ग्राम की गोली बना लें। प्रात: निराहार १ गोली खाकर ऊपर से आधा किलो छाछ (मठा) पिला दें। अत्यन्त चमत्कारी औषधि है। १ सप्ताह प्रयोग करें। (क्रमश:)

यजुर्वेद ने किया मांसाहार वर्जित

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

आज संसार में मांसाहार का चलन सर्वाधिक है। संसार के 80 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति मांसाहार का सेवन करते हैं। फलस्वरूप सैकड़ों प्रकार के पक्षियों की तो जातियां ही विलुप्त हो गई हैं। कुछ जंगली पशुओं की भी यही स्थिति है। हमारे देश भारत से प्रति वर्ष लाखों टन गायों, भैसों आदि का मांस यूरोप और अमेरिका को भेजा जा रहा है। यदि ऐसी ही स्थिति बनी रही तो इस देश में केवल 50 वर्ष बाद गाय और भैंस कल्पना का विषय बन जावेगी। सेमेटिक धर्मों यथा यहूदी, ईसाई और मुसलमानों की धार्मिक पुस्तकों में मांसाहार को मनुष्य का सामान्य आहार बताया है। यहूदी धर्मशास्त्र में लैव्य व्यवस्था में वर्णन है कि यहोबा ते मूसा और हारून को बुलाया और कहा, 'इस्राएलियों से कहो कि जितने पशु पृथ्वी पर हैं उन सभों में से तुम इन जीवधारियों का मांस खा सकते हो।' पशुओं में से चिरे वा फटे खुर के होते हैं और पागुर करते हैं उन्हें खा सकते हो परन्तु पागुर करने वाले वा फटे खुर वालों में से इन पशुओं को न खाना अर्थात् ऊँट जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता वह भी तुम्हारे लिए अशुद्ध है और खरहा जो पागुर तो करता है परन्तु चिरे खुर का नहीं होता है... और सुअर जो चिरे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता इसलिए वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है। इनके मांस में से कुछ न खाना और इनकी लोथ को छूना भी नहीं ये तो तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं। फिर जितने जल जन्तु हैं उनमें से तुम इन्हे खा सकते हो अर्थात् समुद्र वा नदियों के जल जन्तुओं में जितनों के पंख और चोंयटे होते हैं उन्हें खा सकते हो और जलचरों में से जितने जीवधारी बिना पंख और चोयेटें के समुद्र अथवा नदियों मेंं रहते हैं वे सब तुम्हारे लिए घृणित हैं।... फिर पक्षियों में से इनको अशुद्ध जानना, ये अशुद्ध होने के कारण खाएं न जाएं अर्थात् उकाब, हड़फोड़, कुरर, शाही, और भांति भांति की चील, भांति भांति के सब काग, शुतुरमुर्ग, तखमास, जलकुक्कट, बाज, हर्वासेल हवासिल, हाड़गिल, उल्लू, राजहंस, धनेश, गिद्ध, सब भांति के बगुले, गिद्ध, राजहंस, टिटीहरी और चमगीदड़।... और जो पृथ्वी पर रेंगते हैं उनमें से ये रेंगने वाले तुम्हारे लिए अशुद्ध है अर्थात् नेवला, चूहा, गोह, छिपकली, मगर, टिक टिक, सांडा और गिरगिटान। (लैव्य व्यवस्था 11, 1-30)

इसके विपरीत पूर्वीय धर्मों में अहिंसा पर बड़ा बल दिया गया है।

इसलिए वैदिक धर्म से पतित हिन्दू धर्म में भी कुछ जातियां मांसाहार नहीं करती है। जैन और बौद्ध धर्म भी अहिंसा के मानने वाले हैं परन्तु अधिकांश बौद्ध मांसाहारी हैं जब कि जैन लोग मांसाहारी नहीं है। वेदों में मांसाहार का निषेध है वहाँ तो प्राणी मात्र से मित्रता स्थापित करने को कहा गया है। फिर मित्र को कौन मारेगा।

दृते दृꣳहं मा मित्रस्य मा चक्षुषां सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।।
यजु. 36.18

फिर इनसे भी आगे बढ़कर वेद तो प्रत्येक प्राणी में अपनी आत्मा को ही देखने को कहता है और अपनी आत्मा में सबकी आत्मा को देखता है-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभू द्विजानतः।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।। यजु. 40.7

फिर वेद यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म मानता है और यज्ञ को अध्वर कहा जाता है अर्थात् उसमें सर्व प्रकार की हिंसा वर्जित है। गाय को अघन्या कहा जाता है जिसे किसी भी स्थिति में मारा नहीं जाना चाहिए। फिर वेद में पशुओं को मारने वालों को दण्ड देने का विधान भी है। यजुर्वेद में घोड़े को पशुओं का प्रतिनिधि मान कर उसे मारने वालों का दण्ड देने का विधान है।

ये वाजिनं परि पश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निहरित।

ये चार्वतो माꣳसमिक्षामुपासत उतो तेषाम भिगमूर्तिर्न इन्वतु।।

यजु. 25.35

पदार्थ-जो घोड़े के मांस के मांगने की उपासना करते और जो घोड़े को पाया हुआ मारने योग्य कहते हैं उनको निरन्तर हरो, दूर पहुँचाओ, जो वेगवान घोड़ों को निरन्तर सिका कर सब ओर से देखते हैं उनका अच्छा सुगन्ध और सब ओर से उद्यम हम लोगों को प्राप्त होवे और उनके अच्छे काम हमको प्राप्त होवे। बहुत से लोग कहते हैं कि यजुर्वेद में तो अश्वमेधादि यज्ञ का वर्णन है और यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय में उन पक्षी पक्षियों का वर्णन भी है जिनकी बलि दी जाती है और फिर उनका मांस भी खाया जाता है। ऐसे लोगों ने यजुर्वेद को ठीक से पढ़ा ही नहीं है। निश्चित रूप से यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय में कई पशु पक्षियों के विषय में वर्णन है परन्तु उसमें यह बताया गया है कि किस प्रशु पक्षी में किस देवता के समान गुण हैं और किस ऋतु में उनसे विशेष उपकार लिया जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद मन्त्र की व्याख्या ही इस प्रकार की है।

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्ण ग्रीवऽआग्नेयो रराटे।

पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्बान्वोराश्विनावधोरामो बाह्वोः

सोमा पौष्णः श्यामो नाभ्यां सौर्य यामौ श्वेतश्च कृष्णश्च।

पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशमक्थो सक्थ्योर्वाव्यव्यः श्वेत पुच्छऽइन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः।।

यजु. 24.1

पदार्थ-हे मनुष्यों। तुम जो (अश्वः) शीघ्र चलने वाला घोड़ा (तूपरः) हिंसा करने वाला पशु (गोमृगः) गौ के समान नीलगाय है (ते) वे (प्राजापत्याः) प्रजा पालक सूर्य देवता वाले अर्थात् सूर्य मण्डल के गुणों से युक्त (कृष्ण ग्रीवः) काली गर्दन वाले पशु (आग्नेयः) अग्नि देवता वाले (पुरस्तात्) प्रथम से (रराटे) ललाट के निमित्त (मेषी) भेढ़ी (सारस्वती) सरस्वती देवता वाली (अवस्तात्) नीचे से (हन्वोः) ठोढ़ी वाम दक्षिण भागों के ओर (बाह्वोः) भुजाओं के निमित्त (अधोराभौ) नीचे रमण करने वाले (आश्विनौ) जिनका अश्वि देवता ये पशु (सोमा पोष्णः) सोम और पूषा देवता वाला (श्यामः) काले रंग से युक्त पशु (नाभ्याम्) रुन्दी के निमित्त और (पार्श्वयोः) बाई दाहिनी ओर निमित्त (श्वेतः) सफेद रंग (च) और (कृष्णः) काला रंग वाली (च) और (सोर्ययामौ) सूर्य वा यम सम्बन्धी पशु वा (सक्थ्योः) पैरों की गांठियों के पास के भागों के निमित्त (लोमशसक्थे) जिसके बहुत रोम विद्यमान ऐसे गांठियों के पास के भाग से युक्त (त्वाष्टो) त्वष्टा देवता वाले पशु वा (पुच्छे) पूंछ के निमित्त (श्वेतः) सफेद रंग वाला (वायव्यः) वायु जिसका देवता है वह अथवा (वैष्णवः) विष्णु देवता वाला और (वामनः) नाटा शरीर से कुछ टेढ़े अंग वाला पशु इन सबों को (स्वरस्याय) जिसके सुन्दर सुन्दर कर्म उस (इन्द्रस्य) इन्द्र के लिए संयुक्त करो अर्थात् उक्त प्रत्येक अंग के आनन्द निमित्तक उक्त गुण वाले पशुओं को नियुक्त करो।

भावार्थ-जो मनुष्य अश्व आदि पशुओं से कार्य को सिद्ध कर ऐश्वर्य को उन्नति देकर धर्म के अनुकूल काम करें वे उत्तम भाग्य वाले होवें। इस प्रकरण में सब स्थानों में देवता पद से उस उस पद के गुण योग से पशु जानने चाहिए। स्वामी दयानन्द सरस्वती आगे आने वाले मन्त्रों के भावार्थ में इस प्रकार लिखा है-'जो चन्द्रमा आदि के उत्तम गुण वाले पशु हैं उनसे उन उन के गुण के अनुकूल काम मनुष्यों को सिद्ध करना चाहिए।' भावार्थ मन्त्र 24.2 तथा 'जो जिस पशु का देवता है वह उस का गुण है यह जानना चाहिए।' भावार्थ मन्त्र 3 फिर आगे मन्त्र संख्या 40 तक जिन पशु, पक्षियों और जलचरों का नाम है उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-मछली, जल का कौआ, समुद्री कछुआ, मगरमच्छ, मेंढक, सांप, अजगर, लाल सांप, कुलुङ्ग, मृग, भैंसा, नीलगाय, ऊँच, हाथी, प्लुषि, मेंढा,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दिव्यता के सूत्र

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि, महर्षि दयानन्द धाम, सुन्दरनगर, जि०मण्डी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है और वेद को कल्पना लोक से उतार कर व्यवहारिकता के आंगन में उतारने का न केवल साहस किया बल्कि इस तथ्य को प्रमाणित करके दिखा दिया कि वेद हमें तृण से लेकर परमात्मा तक का सत्य और निर्भ्रान्त दिशाबोध देता है। इसीलिए उन्होंने कहा कि हम यदि जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें वेद का पठन-पाठन तथा श्रवण और प्रवचन करना चाहिए। वेद का प्रत्येक मन्त्र अपने आप में अद्भुत और अनुपम है क्योंकि वह उस अद्भुत और अनुपम परमात्मा द्वारा प्रदत है। यहां पर हम ऋग्वेद का प्रसंग प्रस्तुत करके चार महत्वपूर्ण प्रश्नों और उनके उत्तरों का वर्णन करना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द जी अपने भाष्य में लिखते हैं कि जिज्ञासुओं को विद्वानों से ऐसे ही प्रश्न पूछ कर अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए।

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः
पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः
पृच्छामि वाचः परमं व्योम।।

(ऋ. 1-164-34)

यहां पर चार प्रश्न उठाए गए हैं-(1) मैं पूछता हूँ कि इस पृथिवो का परला सिरा क्या है? अर्थात् अन्तिम उद्देश्य क्या है? (2) मैं पूछता हूँ कि ब्रह्माण्ड की नाभि, केन्द्र, बन्धन-स्थल क्या है? क्या द्युलोक ही वह नाभि है, सारा कार्यकारण भाव क्या द्युलोक में ही विश्रान्त है? (3) मैं पूछता हूँ कि तेजस्वी, निरन्तर मार्ग को व्याप्त करने वाले पुरूष की शक्ति किसमें है? (4) मैं पूछता हूँ वाणी के परम आकाश को? वेद में ही इन लोक परलोक का ज्ञान देने वाले प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा गया है कि-

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम।।

(ऋ. 1-164-35)

इस मन्त्र में क्रमशः इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं कि (1) जिस वेदी पर हम बैठकर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथिवी पर अन्तिम सिरा है... (2) यह यज्ञ ही सारे ब्रह्माण्ड की नाभि है... (3) यह सोम अर्थात् वीर्य ही तेजस्वी, अनथक पुरूष की शक्ति है... (4) यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है...।

अब इन उत्तरों पर थोड़ा सा विस्तार से चिन्तन करते हैं ताकि परमात्मा द्वारा प्रदत ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करके हम अपने जीवन को सफल बना सकें। प्रथम बात कही गई है कि-'इयं वेदिः पृथिव्याः परः अन्तः' अर्थात् जिस वेदी पर हम बैठकर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथिवी का अन्तिम सिरा है। यहां पर एक तो इस वैज्ञानिक तथ्य को बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णित किया गया है कि यदि हम आज जिस स्थान पर हैं यहां से किसी भी दिशा को चलना आरंभ करें तो अन्ततः हम इसी स्थान पर पहुंच जाऐंगें जहां से हमने चलना आंरभ किया था क्योंकि पृथिवी गोल है। इसके साथ-साथ यह बात बता दी गई कि अपने जीवन को यज्ञमयी बना देना ही पृथिवी पर आने का हमारा अन्तिम उद्देश्य है। यहीं पर हम अपने आप को देवत्व के साथ जोड़कर देवता बन सकते हैं। देवता बनना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए इसीलिए इस धरती को 'देवयजनि' भी कहा गया है। यह देवों के यजन का स्थान है। हम स्वर्ग नरक के कल्पना लोक में न खो जाएं बल्कि यहीं जहां पर हम हैं यही पर पवित्रता के साथ जुड़कर अपने लिए स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं। स्वर्ग-नरक कोई स्थान विशेष न होकर स्थिति विशेष है और स्वर्ग मरने के बाद ही नहीं मिलता है बल्कि देवत्व के साथ जुड़कर हमें जीते जी ही स्वर्गीय बनने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अपने जीवन को यज्ञमयी बनाने की जरूरत है क्योंकि परोपकारी व्यक्ति को ही परमात्मा सब प्रकार के सुखों से पुरस्कृत करता है। इस यज्ञ रूपी नाव पर आरूढ़ होकर ही हम लोक-परलोक को सुखी बना सकते हैं और कोई उपाय नहीं है। वेद में अन्यत्र कहा गया है-

पृथक् प्रायन्प्रथमा देवहूत-
योऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमा-
रूहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः।।

(ऋ० 10-44-6)

अर्थात् प्रथम कोटि के विस्तृत ज्ञानी दिव्य गुणों का आह्वान करने वाले अलग मार्ग पर जाते हैं। वे बड़े दुस्तर श्रवणीय यशों को प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु जो इस यज्ञ रूपी नाव पर चढ़ने में समर्थ नहीं होते वे कुत्सित, शास्त्र-विरूद्ध कर्म करने वाले यहीं इसी लोक में (एषणाओं के दलदल में) नीचे-नीचे ही धंसते जाते हैं। इस मन्त्र में यज्ञमयी जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के बारे में बताया गया है कि उनका परोपकार का अलग ही मार्ग होता है जिस पर चलते हुए वे अनेक प्रकार के कठिन कार्य भी सफलता पूर्वक करके यश के भागी बनते हैं। ऐसा वे तभी कर पाते हैं क्योंकि वे यज्ञरूपी नाव पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ हो जाते हैं। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जिनका जीवन यज्ञमयी नहीं होता है। इस यज्ञरूपी नाव पर आरूढ़ न हो सकने वाले ऐसे व्यक्ति सांसारिकता के ही दलदल में अधिक से अधिक फंसते चले जाते हैं। इसलिए हम देवयजन करके अपने जीवन को सफल बनाएं क्योंकि इस पृथिवी पर आने का यही लक्ष्य है कि अपने लिए देवत्व का सृजन करके लोक-परलोक को सवांर सकें।

दूसरे प्रश्न का उत्तर है-'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यह यज्ञ सारे संसार की नाभि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस युग के महानतम् क्रान्तद्रष्टा हुए हैं क्योंकि उन्होंने धर्म और अध्यात्म की सही-सही व्याख्या करके उसे सकुंचितता की धारा से बाहर निकालने का महान कार्य किया है। यज्ञ के बारे में उनके शब्द देखिए-'अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं।' मैं समझता हूँ कि श्रीकृष्ण महाराज जी ने गीता में जिस प्रकार से यज्ञ की विस्तृत व्याख्या करके सारे संसार को ही यज्ञ मयी बताया है ठीक इसी प्रकार महर्षि जी के इस छोटे से वाक्य के अन्दर यज्ञ का इतना अधिक विस्तृत वर्णन समा गया है कि इसकी जितनी चाहे व्याख्या करते चले जाएं। अग्निहोत्र से प्रारंभ करके राजनीति और औद्योगिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में होने वाले समस्त कार्यकलाप को उन्होंने यज्ञ के अन्तर्गत ही समाहित कर दिया है। मगर शर्त यह है कि वे सब कृत्य जगत् के उपकार की भावना से होने चाहिए।

अग्निहोत्र पर्यावरण को शुद्ध करने का एक बहुत ही उत्तम तथा वैज्ञानिक ढंग है। हवन में डाले गए समस्त पदार्थ नष्ट नहीं होते हैं बल्कि अग्नि का स्पर्श पाकर वातावरण में फैल जाते हैं। यही नहीं बल्कि अग्नि के स्पर्श से उस पदार्थ की गुणवता भी बढ़ जाती है। इसलिए महर्षि जी ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का विधान किया है। अग्निहोत्र से मात्र इतना ही लाभ नहीं होता है बल्कि इससे व्यक्ति के हाथों परोपकार का अद्भुत कार्य होता है तथा उसका लोक-परलोक संवर जाता है। यज्ञ का बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है। पाणिनि जी ने इसका विस्तार करते हुए इसे संगतिकरण, देवपूजा और दान के साथ जोड़ा है। मानव मात्र में आपसी प्रेम होना चाहिए बड़ों का आदर किया जाना चाहिए और पुण्य कार्य के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देने की भावना होनी चाहिए। यह समर्पण की भावना प्रत्येक क्षेत्र में लागू होती है। जहां व्यक्ति का अपना कोई स्वार्थ होता है वहां पर यह यज्ञ की भावना नहीं होती है और यही प्रत्येक प्रकार की अव्यवस्था का कारण बनता है। यह समर्पण और त्याग की भावना जहां पर नहीं होगी वहां न तो कोई नेता राष्ट्र की सेवा कर सकता है, न परिवार में ही एक-दूसरे का सहयोग और सेवा कर सकता है और न ही सामाजिक उत्थान हो सकता है। इसलिए यज्ञ ही वास्तव में किसी भी अच्छे व्यक्ति का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का या समूचे विश्व का हित करने वाला केन्द्र बिन्दू है। इसीलिए यज्ञ को समूचे ब्रह्माण्ड की नाभि कहा गया है। हमें यज्ञ की भावना को आत्मसात् करने की जरूरत है।

(क्रमशः)

पृष्ठ 5 का शेष-यजुर्वेद ने किया मांसाहार वर्जित

काला हिरण, वानर, लाल मृग, सिंह, जंगली बिल्ली, सियार, बनेला बकरा, चिरौटा, गोरा हिरण, भेड़िया, गोह, कठ फोड़वा, पैङ्गराज पक्षी, कोयल, मयुर, भौंरा, कुण्डुवाची, मूषा, कपिञ्जल पक्षी, कबूतर, उल्लू, खरहा, गेंडा, कुत्ता, सुअर, गदहा, व्याघ्र, शुतुरमुर्ग, सारस, तोता, शयाण्डक पक्षी आदि। पाठक थोड़ा स्वयं सोचें की क्या ये पशु पक्षी बलि देने योग्य हैं? सिंह, भेड़िया, व्याघ्र, सर्प, अजगर आदि को कौन पकड़ कर लावेगा और कैसे उनकी बलि देगा? वास्तव में इस अध्याय में इन पशु, पक्षियों, जलचरों और रेंगने वाले जन्तुओं के गुणों और स्वभावों की चर्चा की गई है। उनके स्वभाव के अनुसार उनको उन्हीं के स्वभाव वाले देवताओं के समान बताया गया है। मांसाहार की तो कहीं चर्चा ही नहीं है केवल उनसे लाभ लेने की बात कही गई है। परन्तु लाभ लेने के लिए 'आ लभते' शब्द का प्रयोग किया गया है। आ लभते शब्द के दो अर्थ होते हैं पहला लाभ प्राप्त करना और दूसरा मारना परन्तु इस अध्याय के सम्पूर्ण मन्त्रों के प्रकरण में लाभ प्राप्त करना ही उपयुक्त अर्थ है फिर वेद में भोजन की चर्चा भी हुई है। यजुर्वेद में भोजन के विषय में विचार कर कहा गया है-

ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज इन्द्रियं सुरया सोमः सुत आसुतो मदाय।

शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि।। यजु. 19.5

मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं कि इस जगत् में किसी मनुष्य को योग्य नहीं है कि जो श्रेष्ठ रस के बिना अन्न खावे। सदा विद्या, शूरवीरता, बल और बुद्धि की वृद्धि के लिए महोषधियों के सारों का सेवन करना चाहिए।

भोजन को अच्छी तरह आकर्षित करने वाला बनाकर ही ग्रहण करने से मनुष्य आरोग्यता प्राप्त करते हैं और उनकी आयु में वृद्धि भी होती है।

इसी धारणा पर बल देते हुये यजुर्वेद का कथन है-

ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च में घृतं च मे

मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च में कृषिश्च में वृष्टिश्च मे

जैत्रं च मऽऔद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताप्। यजु. 18.9

पदार्थ-(मे) मेरा (ऊर्क) अच्छा बनाया हुआ अन्न (च) और सुगन्धित आदि पदार्थों से युक्त व्यञ्जन (मेरी) मेरी (सूनृता) प्रिय वाणी (च) और सत्यवचन (मे) मेरा (पयः) दूध (च) और उत्तम पकाये ओषधि आदि पदार्थ (मे) मेरा (रसः) सब पदार्थों का सार (च) और बड़ी बड़ी ओषधियों से निकाला गया रस (मे) मेरा (घृत) घी (च) और उसका संस्कार करने तपाने आदि से सिद्ध किया हुआ पक्वान्न (मे) मेरा (मधु) शहद (च) और उत्तम भोग साधन (मे) मेरी (सपीतिः) एक सा जिसमें जल का पान (च) और जो चूसने योग्य पदार्थ (मे) मेरी (कृषिः) भूमि की जुताई (च) और गेहूँ आदि अन्न (मे) मेरी (वृष्टिः) वर्षा (च) और होम की आहुतियों से पवन आदि की शुद्धि करना (मे) मेरा (जैत्रम्) जीतने का स्वभाव (च) और अच्छे शिक्षित सेना आदि जन तथा (मे) मेरा (औद्भिद्यम्) भूमि को तोड़ फोड़कर निकलने वाले वृक्षों वा वनस्पतियों का होना (च) और फल फूल से सब पदार्थ (यज्ञेन) समस्त रस और पदार्थों की बढ़ती करने वाले कर्म से (कल्पन्ताम्) समर्थ होवें।

पाठक जान गये होंगे कि इस मंत्र में भोजन के सम्बन्ध में बहुत कुछ बता दिया है और इसमें मांसाहार की गन्ध भी नहीं है। फिर इसी अध्याय के 33वें मंत्र में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर जितने भी पदार्थ हैं उन सभी में अन्न की अत्यन्त प्रशंसा के योग्य है जिससे अन्नवान पुरूष सब जगह विजय को प्राप्त होता है।

यजुर्वेद में अन्न के विषय में और भी बहुत कुछ कहा गया है तथा शाकाहार को ही मनुष्य का वास्तविक भोजन बताया है मांस खाने का निषेध किया गया है परन्तु अब हम विषय को यहीं विराम देते हैं।

गान्धी नगर-I जालन्धर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया

23 दिसम्बर 2018 को आर्य समाज गान्धी नगर-I जालन्धर में रविवार के दिन महान विभूति स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा से प्राप्तः 8 से 10 बजे मनाया गया जिसमें मुख्य यजमान पड़ित अनिल जी थे और पंडित प्रिंस जी ने बड़े ही सुचारू रूप से मन्त्रोचारण के साथ हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के पश्चात प्रधान श्री राजपाल जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला कि कैसे वह एक नास्तिक व्यक्ति से आस्तिकता की ओर मुड़े और सारा जीवन ही आर्य समाज को अर्पित कर दिया यहाँ तक कि अपनी पारिवारिक सम्पत्ति भी आर्य समाज को दान में दे दी। तत्पश्चात पं. प्रिंस जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर पथिक जी द्वारा लिखित भजन ''स्वामी श्रद्धानन्द प्यारा है, तन, मन, धन जिसने निज देश पे वारा है'' सुनाकर सबको मोहित कर दिया तत्पश्चात शान्ति पाठ के साथ यज्ञ सम्पन्न किया, और प्रशाद वितरित किया।

-ईश्वरदास सपरा

महात्मा सत्यानंद मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना

(पंजाब) दूरभाष-91-9814629410

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना-सत्र 2019-2020

छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पुत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2019 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 07 अप्रैल 2019 दिन रविवार को प्राप्तः 8:00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

मोहन लाल कालडा

(मैनेजर)

वर्ष 2019 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2019 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य पांच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज

सभा महामंत्री

आर्य समाज जैतों में हवन यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर जैतों में रविवार दिनांक 6 जनवरी 2019 को प्रात: 10.30 बजे पंडित कमलेश कुमार शास्त्री पुरोहित आर्य समाज फरीदकोट के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ किया गया जिसमें श्री प्रवीण जिन्दल प्रधान आर्य समाज जैतों सपत्नीक यजमान बने। उनके साथ श्री रमेश वर्मा जी सपत्नीक यजमान बने। आर्य समाज जैतों के कर्मठ सदस्यों एवं अधिकारियों के अथक परिश्रम एवं प्रयास से एक बृहद शैड का निर्माण करवाया गया जिसके उपलक्ष्य में इस यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस यज्ञ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री सतीश शर्मा जी मंत्री आर्य समाज फरीदकोट, श्री ललित बजाज जी मंत्री आर्य समाज कोटकपूरा एवं फरीदकोट से श्री मदन मोहन देवगण, श्री जगदीश लाल वर्मा विशेष रूप से उपस्थित हुये। यज्ञ के पश्चात आर्य समाज फरीदकोट के पुरोहित श्री कमलेश शास्त्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सब ईश्वर भक्त हैं एवं ऋषि दयानन्द की अनुयायी हैं। हम सब को एक साथ मिल कर चलना है और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करना है।

श्री शास्त्री जी ने कहा कि वेद के विरूद्ध न होना धर्म का लक्षण है परन्तु वेद का ज्ञान स्वयं ईश्वर की प्रेरणा का फल है। ईश्वर की आज्ञा वा ईश्वर का नियम सृष्टिगत नियम है। वाणी, मन और शरीर से जो भी उत्तम कर्म किया जाता है वह धर्म है और इसके विरूद्ध जो भी कर्म किया जाता है वह अधर्म है। सत्यभाषण, न्यायाचरण आदि इसी प्रकार की प्रवृत्तियाँ है। धृति क्षमा आदि धर्म युक्त कर्म हैं। जब ये किसी के द्वारा पालन करने पर दूसरों का पथ प्रदर्शक बनते है तब ये सदाचार के अन्तर्गत होने से लक्षण की संज्ञा प्राप्त कर लेते हैं। सत्यभाषण आदि से युक्त न्यायाचरण धर्म है परन्तु उसमें पक्षपात का अभाव होना चाहिए। पक्षपात एक प्रकार से पूर्व निश्चित धारणा है। यह खोज और सत्यान्वेषण के मार्ग में बाधक है। पक्षपात न्याय का भी इसी प्रकार विरोधी है। जहां पक्षपात है वहां न्याय की सम्भावना नहीं हो सकती है। अत: सत्याभाषणादि युक्त न्यायाचरण वह है जो पक्षपात से रहित होकर किया जाए। परन्तु फिर भी प्रशन उठता है कि पक्षपात होने पर भी न्याय और सत्य के निर्णय की कोई कसौटी बनानी ही पड़ेगी? इसी का समाधान करते हुए कहा गया है कि ईश्वरीय नियम की अनुकूलता और वेदों की अविरूद्धता आवश्यक है। ये दोनों ऐसी कसौटी है जिसके आधार पर न्यायाचरण को कस कर परखा जा सकता है। जिन आचार्यों ने वेद को ईश्वर की आज्ञा व नियम कहा है उनकी दृष्टि में ईश्वराज्ञा और वेद में अन्तर नहीं है।

आर्य समाज मंदिर जैतों के प्रांगण में हवन यज्ञ के पश्चात सामूहिक चित्र खिंचवाते हुये प्रधान श्री प्रवीण जिन्दल, पं. कमलेश शास्त्री जी, श्री सतीश शर्मा जी मंत्री आर्य समाज फरीदकोट, श्री ललित बजाज जी मंत्री आर्य समाज कोटकपूरा एवं आर्य समाज के सदस्य एवं पदाधिकारी।

उन्होंने कहा कि हम सब को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं आर्य समाज मोगा का निरन्तर सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसलिये हम सब तेजी के साथ आर्य विचारों का प्रचार प्रसार करें। श्री ललित बजाज जी ने कहा कि आर्य समाज फरीदकोट, आर्य समाज जैतों एवं आर्य समाज कोटकपूरा अपने कर्त्तव्यों के पालन में अग्रसर हैं। हम सब लगातार अपने श्रेष्ठ विचारों को लोगों तक पहुंचाने में लगे हुये हैं। अन्त में श्री प्रवीण जिन्दल प्रधान आर्य समाज जैतों ने सभी का धन्यवाद किया और आगे आर्य समाज स्थापना दिवस पर पुन: कार्यक्रम करने का आश्वासन दिया। शान्ति पाठ के पश्चात सभी के लिये भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

प्रवीण जिन्दल प्रधान आर्य समाज

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा में धीयां दी लोहड़ी मनाई गई

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिंडा में पंजाब का प्रसिद्ध त्यौहार लोहड़ी बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर स्कूल प्रांगण में धीयां दी लोहड़ी डाली गई। स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल परिवार सहित, उप प्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग, प्रबन्ध समिति के सदस्य, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता, स्टाफ एवं अन्य द्वारा लोहड़ी मे तिल अर्पित कर बुराइयों को खत्म करने की प्रार्थना की। श्री सुरिन्द्र गर्ग जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति पर्वों और त्यौहारों की संस्कृति है। बिना त्यौहारों के भारतीय संस्कृति नीरस है। हमारे प्राचीन ऋषियों–मुनियों ने मनुष्य के जीवन की नीरसता को दूर करने के लिए पर्वों और त्यौहारों की संरचना की थी। ये पर्व किसी न किसी रूप में हमारे जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। कोई पर्व किसी महापुरूष से जुड़ा होने के कारण उनके जीवन का अनुरकण करने की प्रेरणा देता है तो कोई पर्व ऋतुओं के साथ जुड़ा होने के कारण प्रकृति के परिवर्तित होने की सूचना देता है तो कुछ पर्व हमारी संस्कृति व सभ्यता की झलक प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्वों का उद्देश्य केवल खाना–पीना और मौज–मस्ती करना नहीं है अपितु उन पर्वों से शिक्षा लेकर अपने जीवन में उमंग और उत्साह का संचार करना है। मकर संक्रान्ति का यह पर्व बहुत चिरकाल से मनाया जाता है। यह भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सभी प्रान्तों में इसके मनाए जाने की परिपाटी भी समान पाई जाती है। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल (रूई) बतलाए गए हैं। जिस में तिल सबसे प्रमुख हैं।

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा के प्रांगण में धीयां दी लोहड़ी हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर स्कूल प्रिंसीपल अग्नि प्रज्वलित करती हुई। उनके साथ स्कूल प्रधान श्री अनिल कुमार अग्रवाल, उप प्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग एवं अन्य।

मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सभी प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा भी दिखाई देती है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज बढ़ाने वाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। सभी विद्यार्थियों को लोहड़ी बांटी गई। छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मंच का संचालन अध्यापिका सतिन्द्र कौर व नीलम ने किया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम की तैयारी अध्यापिका अनिता सयाल जी ने बहुत ही अच्छे ढंग से करवाई। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने स्कूल प्रबन्ध समिति का स्वागत करते हुये सभी को लोहड़ी तथा मकर संक्रान्ति की बधाई दी।

प्रिंसीपल सुषमा मेहता

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।